तपस्या मास

तपस्या – 4

22.01.2018

1. **स्वमान** – मैं ज्वालामुखी शक्तिशाली योगी हूँ।

- ज्वाला प्रतीक है परिवर्तन का....ज्वाला प्रतीक है शक्ति का....ज्योति प्रकाश देती है और ज्वाला भष्म करती है....ज्ञान ज्योति है और योग ज्वाला है जिससे सारे विकर्म भष्म हो जाते हैं....माया भी आसपास नहीं फटकती....इस ज्वालामुखी योग से ही हमारी सम्पूर्णता नजदीक आयेगी....।

2. **योगाभ्यास** –

अ. मैं इस देह में विराजमान चैतन्य ज्योति हूँ....महाज्योति शिव बाबा की शक्तिशाली किरणें मेरे ऊपर आ रही हैं....मैं ज्योति इन शक्तिशाली किरणों को स्वयं में समाकर ज्वाला स्वरुप बनती जा रही हूँ....इस योग की प्रचण्ड अग्नि से मेरे विकर्म दग्ध होते जा रहे हैं....मैं सच्चा शुद्ध सोना बनता जा रहा हूँ....मेरे योग की ज्वाला चारों ओर फैलकर अन्य आत्माओं को भी शक्ति प्रदान कर रही है और प्रकृति के पाँचों तत्व भी शुद्ध हो रहे हैं....।

ब. मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ....मेरा मुख ज्ञान सूर्य परमात्मा की ओर है....ज्ञान सूर्य की प्रचण्ड किरणें मेरे ऊपर पड़ रही हैं....मैं उनके प्रकाश से प्रकाशित होता जा रहा हूँ....मैं ज्वाला का एक पुंज अर्थात् ज्वालामुखी योगी बनता जा रहा हूँ....मेरा प्रकाश पूरे विश्व में फैल रहा है....।

3. **धारणा – मैंपन और मेरेपन का समर्पण**

- ज्वालामुखी योग के लिए मैंपन और मेरेपन का समर्पण परम आवश्यक है। मैंपन और मेरापन ही सर्व समस्याओं की जननी है। इसलिये हम अपने `मैंपन` और `मेरेपन` को अर्पण कर उसकी जगह `बाबापन` ले आयें। वास्तव में करनकरावनहार तो वही हैं, हम तो निमित्त मात्र हैं।

4. **चिंतन** – महीन मैंपन और मेरापन क्या-क्या हैं ?

- मैंपन और मेरेपन से क्या-क्या नुकसान हैं ?

- मैंपन और मेरेपन का त्याग कैसे करें ? इसके लिए क्या अभ्यास करें ? ?

5. **स्वराज्याधिकारियों प्रति** – प्रिय स्वराज्याधिकारियों ! तपस्या हर मुश्किल को आसान कर देती है। तपस्या ही हमारे जीवन का श्रृंगार है। तपस्या ही सर्व गुणों और शक्तियों को हममें भरेगी। तपस्या ही हमारी सम्पन्नता और सम्पूर्णता को समीप लाएगी। इसलिये हम अपनी तपस्या को बढ़ायें और कर्मयोग से ज्वालामुखी योग की ओर बढ़ें।